कोविड-१९ के दौरान और बाद में शिक्षा प्रणाली में हुए परिवर्तन का एक अध्ययन

डॉ संजय कुमार
प्राचार्य श्री गणेश कॉलेज ऑफ
एज़ुकेशन चूडीना ब्रहाना (राज.)
sanjay.kr2004@gmail.com

सारांष

शोध-सार : प्रस्तुत आलेख अध्ययन करता है कि कोविड–19 अवधि के दौरान व इसके उपरांत भारत मे शिक्षा के क्षेत्र में किस प्रकार से रूपांतरण हुआ है। कोविड–19 का असर पूरी दुनिया के साथ–साथ भारत पर भी पड़ा, इससे अर्थव्यवस्था का हर क्षेत्र प्रभावित हुआ। भारत मे कोविड–19का सर्वाधिक प्रभाव शिक्षा के क्षेत्र पर हुआ। वायरस के लगातार बढ़ते प्रभाव एवं संक्रमण की चेन को तोड़ने के लिए देश में स्कूल कॉलेज एवं विश्वविद्यालय जैसे अति भीड़ भाड़ वाले सीानों को बंद कर दिया गया, जिसका परिणाम यह हुआ की बच्चो की पढ़ाई एकदम बाधित हो गई, घर बैठकर बच्चो का शारीरिक मानसिक व बौद्धिक विकास अवरूद्ध होने लगा। महामारी ने व्यक्ति के खाने पीने, रहने सहने, सोचने व पढ़ने के तरीको को बदलने पर मजबूर कर दिया। शिक्षा के क्षेत्र मे हो रहे नुकसान की क्षति पूर्ति के लिए शिक्षण की एक नई व्यवस्था शुरू की गई जिसे ई लर्निंग या डिजिटल लर्निंग का नाम दिया गया प्यह व्यवस्था शिक्षा मे रूपान्तरण लेकर आई।

बीज-शब्द : कोविड, रूपान्तरण, क्षतिपूर्ति, ओपचारिक,शिक्षण अधिगम।

प्रस्तावना

वर्ष 2020 के शुरुआत में देश व दुनिया के सामने एक ऐसा वायरस आया जिसने अपने जानलेवा संक्रमण से ना केवल लाखों लोगों के जीवन का अंत कर दिया बल्कि विश्व को स्थिर अवस्था में लाकर खड़ा कर दिया। वायरस व इसके संक्रमण को रोकने या कम करने की दवा पूरे विश्व मे किसी के पास भी उपलब्ध नहीं थी। वायरस के बढ़ते हुए प्रकोप को ध्यान में रखते हुए विश्व स्वास्थ्य संगठन डब्ल्यूएचओ ने 11 मार्च 2020 को "कोविड–19" को वैश्विक महामारी घोषित कर दिया तथा इसके बचाव के लिए जो दिशा निर्देश जारी किए उनमें सोशल डिस्टेंसिंग को प्रमुख माना। इस संदर्भ में "2 गज की दूरी है बहुत जरूरी" को इस बीमारी से बचाव का मूल मंत्र माना गया। भारत में कोविड–19 का पहला केस दक्षिण भारतीय राज्य केरल में जनवरी 2020 में आया था। प्रारंभ में कोरोना वायरस के संक्रमण को रोकने एवं इसके बचाव के लिए कोई दवाई या वैक्सीन उपलब्ध नहीं थी परिणाम स्वरुप विश्व सहित भारत में भी संक्रमण की

रफ्तार तेज हो रही थी, जान व माल का अत्यधिक नुकसान हो रहा था, वायरस के लगातार बढ़ते प्रभाव एवं संक्रमण की चेन को तोड़ने के लिए देश में स्कूल कॉलेज एवं विश्वविद्यालय जैसे अति भीड़भाड़ वाले स्थानों को बंद कर दिया गया, जिसका परिणाम यह हुआ की बच्चो की पढ़ाई एकदम बाधित हो गई। यूनेस्को की एक रिपोर्ट के अनुसार लगभग 1.3 बिलीयन विद्यार्थियो की पढ़ाई लोक डाउन के कारण बाधित हुई। विद्यार्थियो की पढ़ाई के नुकसान की क्षतिपूर्ति के लिए ऐसी तकनीकी के जरूरत महसूस की जाने लगी जिससे बच्चो की पढ़ाई घर बैठे बैठे ही करवाई जा सके, परिणामस्वरूप सॉफ्टवेयर इंजीनीयर्स के द्वारा ऐसी तकनीक व मोबाइल अप्प विकसित किए गए जिनकी मदद से इंटरनेट मे माध्यम से घर बैठे बच्चो की पढ़ाई का कार्य शुरू किया जा सका। शिक्षण की इस नई विधि को आन लाइन टीचिंग/ई लर्निंग आदि के नाम से जाना गया।

उदेश्य

कोविड–19 के दौरान शिक्षा में हुए रूपांतरण का अध्ययन करना।

सरकार एवं अन्य संस्थाओं द्वारा लिए गए निर्णय एवं कदमों का अध्ययन।

कोविड–19 के दौरान शिक्षा के क्षेत्र मे हुए नकारात्मक व सकारात्मक प्रभाव को जानना।

वर्तमान समय में ही लर्निंग को जारी रखने की आवश्यकता जानना व सुझाव प्रस्तुत करना।

कोविड से पूर्व भारतीय शिक्षा व्यवस्था एवं इसमे परिवर्तनः

कोविड से पहले भारत मे शिक्षण का कार्य प्रमुख रूप से स्कूल के माध्यम से करवाया जाता रहा है। इस व्यवस्था मे शिक्षण का कार्य अध्यापको के द्वारा पूरा करवाया जाता है तथा अध्यापक के द्वारा शिक्षा विभाग या शिक्षा बोर्ड द्वारा पूर्व निर्धारित पाठ्यक्रम को पूरा करवाने उपरांत बच्चो की परीक्षा ली जाती है ᑊ परीक्षा मे पास होने के बाद विद्यार्थी को अगली कक्षा मे प्रोमोटे कर दिया जाता है। इस शिक्षण व्यवस्था मे जो पाठ्यक्रम निर्धारित किया जाता है वह एक कक्षा के सभी बच्चो के लिए एक समान होता है। व्यक्तिगत रूप से बच्चो की रूचि व क्षमताओ मे विभिन्नता होने के बावजूद सरकार द्वारा सभी के लिए समान पाठ्यक्रम निर्धारित करना नितांत अव्यवहरिक कहा जा सकता है। महामारी ने व्यक्ति को उसके रहने सोचने व पढ़ने के तोर तरीके बदलने पर मजबूर किया, शिक्षा का क्षेत्र भी इससे अछूता नहीं रहा। इस दौर मे शिक्षण व अधिगम की परिस्थिति व तकनीकी मे भी परिवर्तन हुआ। अब शिक्षा स्कूल की चारदीवारी से हटकर डिजिटल माध्यमों जैसे स्मार्ट फोन, कम्प्युटर, लैपटाप इतियादी जो की इंटरनेट के माध्यम से काम कर सकने मे सक्षम हो, के ऊपर निर्भर हो गई पशिक्षण व अधिगम की इस नई व्यवस्था को आनलाइन टीचिंग/ई लर्निंग या डिजिटल लर्निंग का नाम दिया गया व महामारी के दौरान कक्षाओ का संचालन डिजिटल माध्यम जैसे गूगल क्लासरूम, जूम, मीटिंग जैसे ऐप्प व यूट्यूब, जैसे सोश्ल प्लेटफोरम के माध्यम से किया गया।

 ISSN : 2394 - 9430

नकारात्मक प्रभावः

- आन लाइन शिक्षण की व्यवस्था से बच्चों के द्वारा निसक्रिय शिक्षा (पैसिव लर्निंग) प्राप्त की गई,सहपाठ्येतर क्रियाओ का इसमे कोई स्थान नहीं रहा जिससे बच्चो का स्वाभाविक विकास अवरूद्ध हुआ।
- भारत के अंदर पाठ्यक्रम की संरचना कक्षा कक्ष के लिए की जाती है इसको ऑनलाइन या डिजिटल माध्यम में एकदम परिवर्तित करना काफी कठिन एव चुनोतीपूर्ण कार्य है।
- कंप्यूटर व मोबाइल पर लगातार कार्य करते रहने से बच्चों को सिर दर्द व आंखों की समस्या का सामना करना पड़ा है।
- भारत मे सरकारी विद्यालयो मे पढ़ने वाले अधिकांश बच्चो के पास ऑन लाइन शिक्षा के लिए अनिवार्य कंप्यूटर, लैपटॉप, स्मार्टफोन जैसे महंगे साधन उपलब्ध नहीं है।
- जिन विद्यार्थियों के पास डिजिटल डिवाइस उपलब्ध नहीं है उनकी शिक्षा प्रभावित हुई है।
- ग्रामीण क्षेत्रो मे इंटरनेट उपलब्धता व कनेक्टिविटी की समस्या रहती है जिससे पढ़ाई बाधित हुइ।
- अध्यापकों के पास ऑन लाइन माध्यम से पढ़ाने एवं अनुभव नहीं था व ना ही इसके प्रशिक्षण की उचित व्यवस्था की गई जिससे शिक्षण का कार्य अपूर्ण दक्षता के साथ किया गया।

सकारात्मक प्रभाव व रूपान्तरणः

- आन लाइन शिक्षण तकनीकी के कारण अब शिक्षा, शिक्षण के औपचारिक केन्द्रो के बाहर प्रदान करना भी संभव हो सका है। ऑन लाइन माध्यम से घर बैठ कर कभी भी पढ़ाई की जा सकती है।
- पारंपरिक शिक्षा के केंद्रों में बच्चों शिक्षा पर ज्यादा खर्चा करना होता है जबकि ऑन लाइन शिक्षा या ई लर्निंग पर खर्चा कम करना पड़ता है।
- आन लाइन शिक्षण व्यवस्था मे सीमित संसाधनो जैसे इंटरनेट,कंप्यूटर, लैपटॉप,या स्मार्टफोन की जरूरत होती है जिनकी व्यवस्था करना सरल है।
- डिजिटल तकनीकी की वजह से बच्चों को एक ही स्थान पर एक ही विषय की विस्तृत पाठ्य सामग्री उपलब्ध हो सकी है।

- ♦ डिजिटल माध्यम से शिक्षण अधिगम के दौरान एक साथ रिकॉर्डिंग, लाइव उत्तर, प्रतिउत्तर इत्यादि संभव हो सका है।
- ♦ इस तकनीकी के कारण विद्यार्थियो को पढ़ने के लिए अधिक समय उपलब्ध हो सका है।
- ♦ डिजिटल माध्यम से शिक्षा प्रदान करना ना केवल सुगम साबित हुआ है बल्कि यह आसान भी है एक साथ सैकड़ो हजारो आदमी जुड़ कर किसी भी विषय पर व्याख्यान दे सकते है, सेमिनार, कॉन्फ्रेंस आदि आयोजित कर सकते है व विचारो का आदान प्रदान आसानी से कर सकते है।

निष्कर्षः

सदियो से चले आ रहे सिस्टम को एकदम बदलना बड़ा ही मुश्किल व चुनोतीपूर्ण कार्य होता है फिर भी "आवश्यकता आविष्कार की जननी होती है" यह वाक्य कोविड के समय भारत की शिक्षा व्यवस्था मे हुए परिवर्तनों पर पूरी तरह से लागू होती है प वर्तमान समय मे प्रचलित ऑन लाइन शिक्षण अधिगम व्यवस्था का भविष्य उज्ज्वल है, यह नई शिक्षा नीति 2020 के प्रावधानों के अनुसार भी है, निसंदेह आने वाले समय मे इसके और अधिक सकारात्मक व सुधारात्मक परिणाम देखने को मिलेगें

Webreferences:

- Various reports of Health&HRD Ministry Govt. of India.
- https:/ncert.nic.in
- https://en.unesco.org
- www.google.com
- www.swyamprabha.gov.in
- www.eklavyavvya.com